कुआँ निर्माण में दिल से दान

महिषी एक प्राचीन, पुरातात्विक ऐतिहासिक गांव बहुत पहले से ही रहा है। यह गाँव दो पंचायत की है। (1) महिषी उतरी तथा महिषी दक्षिणी। महिषी की आवादी 12000 लगभग हैं। विभिन्न समुदाय के लोग यहाँ रहते है यहाँ ब्राह्मण, राजपूत, कायस्थ, कुर्मी, शर्मा, मल्लाह, धानुक, नाई, पासवान, बेलदार चमाड़, यादव डोम, मुश्लिम, इसाई प्रायः सभी धर्म के लोग रहते हैं जिसमें सबसे अधिक आबादी ब्राह्मणों की है।

महिषी गांव के पश्चिम दिशा में कोशी नदी बहती है। यहाँ पौराणिक काल से ही पोखर, तालाब कुंआ रहाहै यहां आठवी शताब्दी में निर्मित, पंडित मंडण मिश्र का कुंआ अभी भी मौजूद है। पंडित मंडण मिश्र का शास्त्रार्थ आदि शंकराचार्य से महिषी में हुआ था। महिषी गाँव में कुंआ पेयजल के रूप में 8वीं सदी से ही रहा है। जिसका प्रमाण अभी भी मौजुद सैकड़ो कुंए है। वर्तमान में 57 कुंए अभी भी पानी के तलतक मौजूद है। जिसमें 19 कुंआ चालू अवस्था में है।

महिषी गांव के मध्य में 1338 साल में निर्मित मालती ओझाईन का कुंआ है जो पूर्णतः कचड़े से भड़ा था। मालती ओझाइन स्व0 नकटू झा का बेटी थी। मालती ओझाइन के माता–पिता की मृत्यु बचपन में ही हो गई। वह अनाथ हो गई उसके बाद उनका लालन पालन जैठ रैयत परिवार बिपत झा ने किया। बाद में उनकी शादी भौड़ा झा से हुआ। जिससे उनको पांच संतान हुआ। उनका दिन बदल गया।

मालती ओझाईन के स्मृति में इस कुंए का निर्माण उनके पुत्रों ने किया। यह कुंआ महिषी गांव के मध्य में स्थित है। इस कुंए को बड़ी शोक से उनके पुत्र ने बनवाया 15 इंच चौड़ाई कुए की लहडा की है तथा चूना सुर्खी एवं कत्था देकर इस कुंए को बनवाया गया। ऐसा कुंआ महिषी गांव में सिर्फ तारा स्थान का है।

कुंआ निर्माण के बाद सौकडो परिवार के लोग पेयजल के रूप में इस कुंए का उपयोग करते थे 1980 ई0 तक इस कुंआ का उपयोग पेयजल, स्नान के उपयोग में होता था। धीरे–धीरे चापाकल का प्रचलन होने लगा इसका उपयोग भी कम हो गया। बाद में एक घोड़ा इसमें गिर गया लोगों ने मिलकर घोड़ा को निकाला धीरे–धीरे लोगों ने इस कुंए का पानी पीना छोड़ दिया। इसके प्रति नाकारात्मक शोच समाज में पैदा हुई। चूंकि कुंआ सघन आबादी के बीच अवस्थित था आस–पास के लोगों ने इसमें गंदा पदार्थ फेकना आरंभ कर दिया। धीरे–धीरे कुंआ पूर्णतया गन्दे पदार्थ से भर गया। 2007 में मेघ पाईन अभियान के राष्ट्रीय समन्वयक श्री एकलव्य प्रसाद गांव धूमधूम कर कुंए का अवलोकन किया उसकी क्रम में उक्त कुंए का भी निरीक्षण किया।

राजेन्द्र भाई जिला समन्वय इस कुंए की जीर्णोद्धार करने की प्रबल इच्छा थी। वे अपनी लागत से दिसम्बर–2009 इसे कुंए को मजदूर द्वारा गंदगी उड़ाही कराया। स्थानीय लोगों से भी आर्थिक सहयोग की मांग करते रहे लेकिन सहयोग नहीं मिला।

भाई के नेतृत्व में बराबर स्थानीय लोगों से सहयोग के लिए प्रयास होता रहा। उड़ाही के बाद कुंए में मानव तथा मवेशी को गिड़ने की सम्भावना बनी रहती थी। अंत में बांस का चचाड़ बनाकर उसे (झांप) ढक दिया गया। सहयोग के क्रम में कमलानंद झा (जो कि मालतीओझाइन वंश के है) से राजेन्द्र भाई का सम्पर्क हुआ। उन्होंने कहा मैं इस कुंआ के जिर्णोद्धार हेतु अपनी कोष से 40000 रू0 दूंगा बसर्ते कि इस कुंए पर मेरे पिता नागेश्वर झा की स्मृति में कमलानंद झा द्वारा जिर्णोद्धार प्लेट लगाया जाय।

उधर शौचालय की टंकी वाले से भी बातचीत हुई उसने कहा आपलोग धर्म का काम कर रहे अगर हमारे शोच का टेंक हटाने से कुंआ बन जाय साथ ही उसका पानी शुद्ध हो जाएगी तो आप टकी को तोड़वा दीजिए। मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

कुंआ जीर्णोद्धार का कार्य मई 2010 में आरंभ हुआ। कुंआ बन गया। लेकिन चबूतरा निर्माण का कार्य पुनः जुलाई 10 में आरंभ किया गया लेकिन टंकी नहीं टुटा। कुंआ के हिस्सेदार आते वहां कार्य करवा रहे मेघ पाईन अभियान के कार्यकर्त्ता से टंकी को तोड़वाने के लिए सम्पर्क करने के लिए कहता लेकिन किसी की हिम्मत या तो बात करने या तोड़ने की नही होती थी।

दिनांक 23.8.2010 का कुंआ का चबूतरा ढ़लाई हो रहा था। शिवकुमार झा नामक व्यक्ति आए। आदित्य ने उनसे टंकी के बारे में कहा। वे धुरमुश लिये तथा 3–4 धुरमुश जोड़–जोड़ से शौचालय के टंकी पर प्रहार किया टंकी टूट गई। बाद में मजदूर के सहायता से टंकी को मिट्टी से भड़ दिया गया। आज मृत कुंआ जीवित अवस्था में है यह कुंआ लगभग 5000 की आबदी के बीच मध्य गांव में स्थित है।